आत्मजयी' कहानी में जीवन और मृत्यु का संघर्ष

Aatmajayi Kahani Me Jeevan Aur Mrutyu Ka Sangharsh

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangaluru.**

भूमिका:-

कुँवर नारायण द्वारा रचित खंडकाव्य 'आत्मजयी' (1965) अखिल भारतीय स्तर पर प्रशंसित एक असाधारण कृति है। 'आत्मजयी' ने ना सिर्फ़ हिन्दी अपितु भारतीय भाषाओं में अपनी एक खास उपस्थिति दर्ज़ की है और सर्वत्र प्रशंसित हुआ है। इसका मूल कथासूत्र कठोपनिषद् में नचिकेता के प्रसंग पर आधारित है। एक आख्यान के पुराकथात्मक पक्ष को कवि ने आज के मनुष्य की जटिल मनःस्थितियों से जोड़ा है। आज के मनुष्य को बेहतर अभिव्यक्ति देने का एक बेहतर उदाहरण आत्मजयी है । जीवन के साथ-साथ उसकी अनश्वरता, जीने की उत्कट लालसा और मृत्यु की उदात्त भारतीय प्रेरणा इसके मूल में है । एक ऐसे सत्य से साक्षात कराती कविता है यह जिसमें मरणधर्मा व्यक्ति जीवन से बड़ा, या चिरस्थायी हो। यही मनुष्य को सांत्वना दे सकता है कि मर्त्य होते हुए भी वह किसी अमर अर्थ में जी सकता है।

भारतीय साहित्य में 'मिथक' आधुनिकता की देन है और हिंदी में मिथकीय चेतना का प्रथम प्रयोग धर्मी होने का गौरव आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी को प्राप्त है। तथा 'आत्मजयी' का मूल कथ्य 'कठोपनिषद' के नचिकेता प्रसंग पर आधारित है। कवि द्वारा रचित यह खंडकाव्य भले ही वर्ष 1965 में प्रकाशित हुई है, किंतु काव्य में वर्णित औपनिषदिक कथा कवि के तत्कालीन समय और वर्तमान समय दोनों को समृध्द करता है। एक प्रकार से इस आख्यान के पुरा-कथात्मक पक्ष को कवि ने आज के मनुष्य की जटिल मनः स्थितियों को एक बेहतर अभिव्यक्ति देने का अपूर्व साधन बनाया है। चूँकि यही कारण है कि कुँवर नारायण के काव्य-संसार में जितनी मजबूती से 'मिथक' अपना स्थान ग्रहण किया हुआ है उतनी ही सशक्त रूप में आधुनिकता भी। अस्तु इनके काव्य में मिथक और आधुनिकता दोनों साथ-साथ चलते हैं। 'आत्मजयी' में नचिकेता की अभिव्यक्ति कहीं–न-कहीं कवि की स्वतंत्र अभिव्यक्ति लगती है।

आत्मजयी के मूल में आधुनिक मनुष्य का द्वन्द्वग्रस्त मन है ।विचारशील मनुष्य कहाँ तक जाकर सोच सकता है, इसकी पूरी परिणति कविता का ऊत्स है । कुंवर नारायण अपनी रचनाशीलता में इतिहास और मिथक के माध्यम से वर्तमान को देखने के लिए जाने जाते है। उनका रचना संसार इतना व्यापक एवं जटिल है कि उसे किसी खाँचों में नहीं बाँटकर देख सकते। मिथकों का सर्वाधिक सार्थक उपयोग आधुनिक हिन्दी कविता में कुँवर जी ही करते हैं । पर हाँ मिथकों के उपयोग केआर समय भी उनकी दृष्टि सर्वथा आधुनिक भारतीय बुद्धिजीवी की रहती है। आधुनिक हिन्दी कविता में इतनी वस्तु व्यंजकता भी अकेले कुँवर जी के पास है । इतिहास और पुराख्यान को कथातत्त्वों से बुनकर उन्होने सधी हुई कविता की है। बहुलार्थ तत्त्वों की प्रधानता इनकी रचनात्मक विशेषता है। एक खास बात कुँवर जी के पास है कि पुराख्यान और मिथकों कि कथावस्तु को उठाते समय वो सिर्फ़ भारतीय कथाख्यानों तक सीमीत ना रहकर ग्रीक की, लैटिन की ज़मीन से अपनी कथा को जोड़ते हैं। यही एक खास वजह है जिससे उनकी कविता कहीं से भी भटकती नहीं है। और अपनी अनथक यात्रा पूरी कर लेती है, जिसकी स्वाभाविक माँग कविता से थी ।

कविता में यह वैचारिक मतभेद वर्तमान मनुष्य का मतभेद है। मिथक से आधुनिकता की ओर अग्रसर होने वाले मनुष्य का विवादित बयान है। 'आधुनिकता' मनुष्य के मन को खोलती है। आधुनिकता मनुष्य की तर्कशील शक्ति को मजबूत करता है। यही कारण है कि 'आत्मजयी' का नचिकेता अपने पिता वाजश्रवा से प्रश्न करने में किंचित भयभीत नहीं होता है। अर्थात् कहा जा सकता है कि औपनिषदिक मनुष्य का भौतिक मनुष्य के साथ मतभेद है और यही मतभेद 'आत्मजयी' में मिथक और आधुनिकता के संबंध को पूरा भी करता है। साहित्य में 'आधुनिकता' का प्रधान और मूल आधार मानते हुए डॉ॰ जगदीश गुप्त लिखते हैं, "आधुनिकता अपने सही अर्थ में उस विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से उपजती है, जो व्यक्ति को वास्तविक युग-बोध प्रदान करने के साथ-साथ अधिक दायित्वशील सक्रिय और मानवीय बनाता है"। यहाँ कहा जा सकता है कि 'आत्मजयी' का नचिकेता अधिक दायित्वशील सक्रिय और मानवीय है।

ध्यातव्य है कि 'आत्मजयी' का कथ्य 'कर्मकांड संबंधी मिथक' पर आधृत है जिसका नचिकेता युवा पीढ़ी की ओर से कमान थामे हुए हैं, तो वाजश्रवा वृध्द पिता की ओर से। कवि ने खंडकाव्य में दो युगों के मनुष्य को एक मंच पर लाकर उसके स्वतंत्र अभिव्यक्ति को उजागर किया है। नचिकेता नवीन युवाओं के आगे चलने वाला नायक है तो वाजश्रवा एक जिम्मेदार पिता के मार्ग पर चलने वाले श्रेष्ठ पिता का अभिनय कर रहा है। दोनों के बीच अंतर केवल इतना ही है कि एक बाह्य-आडंबर से ग्रस्त है तो दूसरा बाह्य-आडंबर के बिलकुल विपरीत। उसका हठ एक दृढ़ जिज्ञासु का हठ है जिसे कोई भी सांसारिक वरदान डिगा नहीं पाता।

नचिकेता अपने पिता वाजश्रवा के बाह्य-आडंबर से बिलकुल समझौता नहीं करता है। उल्टे 'पेचिंदा मंत्र जाप', 'गुप्त मंत्रणाएं', 'स्तुतियाँ' आदि पर प्रश्न चिह्न लगाते हैं। लताश्री के अनुसार, "कुँवर नारायण मानवीय मूल्यों की तालाश में रहने वाले कवि हैं। एक ओर तो उनकी कविता में आधुनिक भाव-बोध है, तो दूसरी ओर तर्क, विचार एवं चिंतन की प्रधानता होने से उसमें वैज्ञानिक बोध भी समाविष्ट हुआ है"। कवि लिखते हैं- " नचिकेता की चिंता भी अमर जीवन की चिंता है। 'अमर जीवन' से तात्पर्य उन अमर जीवन-मूल्यों से है जो व्यक्ति-जगत का अतिक्रमण करके सार्वकालिक और सार्वजनीन बन जाते हैं। नचिकेता इस असाधारण खोज के परिणामों के लिए तैयार है। वह अपने आपको इस धोखे में नहीं रखता कि सत्य से उसे सामान्य अर्थों में सुख ही मिलेगा; लेकिन उसके बिना उसे किसी भी अर्थ में संतोष मिल सकेगा, इस बारे में उसे घातक संदेह है। 28 शीर्षकों में बंटे इसे प्रबंध काव्य में कवि ने मूल्यों की सैध्दांतिक विवेचना और दार्शनिक व्याख्या की है। कवि की यह दार्शनिक व्याख्या उपनिषदिक(औपनिषदिक) होते हुए व्यावहारिक और व्यक्ति प्रधान है, जिसमें व्यक्ति की स्वतंत्र अभिव्यक्ति आज के मनुष्य के संदर्भ में सृजित है..."। आगे कवि ने नचिकेता के संबंध में लिखा है- "नचिकेता अपना सारा जीवन यम, या काल, या समय को सौंप देता है। दूसरे शब्दों में वह अपनी चेतना को काय-सापेक्ष समय से मुक्त कर लेता है : वह विशुद्ध 'अस्तित्वबोध' रह जाता है जिसे 'आत्मा' कहा जा सकता है"।

'कठोपनिषद' का वाजश्रवा और कुँवर नारायण का वाजश्रवा दोनों आध्यात्मिक दृष्टि से वैदिक है, जबकि नचिकेता औपनिषदिक। परिणाम यह होता है कि, नचिकेता अपने पिता वाजश्रवा के 'आस्थाबोध' का बेहिचक चैलेंज करता है यही चैलेंज आधुनिकता से भरे 'अस्तित्वबोध' का मार्ग प्रशस्त करता है-

शंभुनाथ 'हिंदू मिथक : आधुनिक मन' के 'आत्मजयी : भौतिकवाद और इससे परे' निबंध में लिखते हैं "कुँवर नारायण एक आधुनिक कवि हैं। उन्हें नई सभ्यता में भौतिकवाद की बढ़ती प्रधानता, लोभ, द्वेष, हिंसा और निराशा का बढ़ता जाना और मनुष्य का आमतौर पर अपने भाव को भूलकर शरीर भाव में डूबे रहना उद्विग्न करता है। वे नई कविता युग के 'आत्मन्वेषण' को प्रश्नों से भरे मानव मन और आत्मज्ञान में रूपांतरित करते हैं। वे विरोधाभास से दिखने वाले 'लौकिक अध्यात्म' को चुनते हैं"। अपने पिता वाजश्रवा से धर्म-कर्म संबंधी मतभेदों के परिणामस्वरूप नचिकेता अपने पिता की आज्ञा, 'मृत्यवे त्वा ददामी' अर्थात मैं तुम्हें मृत्यु को देता हूँ, को शिरोधार्य करके यम के द्वार पर चला जाता है, जहाँ वह तीन दिन टीके रहा, भूखा-प्यासा रहकर यमराज के घर लौटने की प्रतीक्षा करता है। उसकी इस साधना से प्रसन्न होकर यमराज उसे तीन वरदान माँगने की अनुमति देता है। नचिकेता के तीन वरदान निम्न है-

पहला यह कि वाजश्रवा का नचिकेता के प्रति क्रोध शांत हो, दूसरा यज्ञों की नचिकेताग्नि, तीसरा मृत्यु के रहस्य का उद्‌घाटन।

यमराज तीन वरदान देकर नचिकेता को घर वापस भेजते हैं-

"मैं तुमको जीवन फिर से वापस देता हूँ।
वह ज़िम्मेदारी
फिर से तुझे सौंपता हूँ।
मैं आदि अंत की तुलनाओं के बिना तुझे
जीवन-धारा में पुनः बहाए देता हूँ। ..."

यमराज द्वारा नचिकेता को वरदान देकर वापस घर भेजना 'मिथक' का अभिप्राय है और यमराज के साथ दृढ़ता से सवाल करना आधुनिकता का अभिप्राय है। इधर कवि ने प्रयोगधर्मिता की तरह 'आत्मजयी' में एक नए शीर्षक को जोड़कर उपनिषद के कठोपनिषद कथा से कुछ दूर आगे लेकर बढ़ गया। वह यह कि जहाँ कठोपनिषद में यमराज के तीन वरदान के बाद आगे कुछ पता नहीं चलता है वहीँ 'आत्मजयी' में नचिकेता को उनके पिता वाजश्रवा से मिलाते हैं। यह मिलन आकस्मिक और शुद्ध अस्तित्व बोध से भरा आधुनिक है, जहाँ पर नचिकेता अपने पिता वाजश्रवा के स्वभाव में परिवर्तन भी देखता है- मिथक में अमर जीवन की कामना मानवता को श्रेष्ठतर आदर्श अपनाने की अवधारणा पर विकसित हुई दिखाई देती है। पुनर्जन्म, कर्मकांड में आस्था भले न चरितार्थ हो किंतु अमर जीवन मूल्यों की उदात्तता मनुष्यता को उच्चतर भूमि अवश्य प्रदान करती है और वह इस जीवन के लिए सार्थक दिखती है।

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में 'मिथक' का प्रथम प्रयोग आधुनिकता की देन है और यह मिथकीय कथाएँ आदिमानव के आख्यायिक घटनाओं और उसकी चारित्रिक विशेषताओं को एक सांस्कृतिक रूप देता है। कारणस्वरूप मिथकीय कथाएँ प्रत्येक देश और उस देश की युग विशेष की जीवनाभिव्यक्ति के लिए कलात्मक मार्ग प्रशस्त करते आई हैं। जिससे कवि और साहित्यकार का सच अधिक संप्रेषणीय हो जाता है। कुल अठाईस भाग में विभक्त कवि की 'आत्मजयी' (1965) में दो पीढ़ियों के संघर्ष के द्वारा युगीन जीवन के चित्रण का एक सार्थक प्रयास है। जिसमें पुरानी पीढ़ी के प्रतीक नचिकेता के पिता वाजश्रवा उसके व्यक्तित्व को विकसित नहीं होने देना चाहते हैं। जबकि नचिकेता विपरीत परिस्थितियों के विरोध में

'अधिकार समान होना चाहिए' की माँग करता है। आधुनिक युग में मौजूद धार्मिक पाखंड, सर्वसत्तावाद और औद्योगिक स्पर्धा के अमानवीय रूपों को मिथकीय अनुभूति में ढालने के लिए ही कुँवर नारायण ने नचिकेता को चुना था। उन्होंने वाजश्रवा के रूप में भौतिकवादी दुनिया के पाखंडों को चुनौती दिया है। अर्थात् एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से लगातार संघर्ष करती है और 'आत्मा की स्वायत्तता', 'आत्मविद्', 'सृष्टि-बोध', 'सौंदर्य-बोध', 'शांति-बोध', 'मुक्ति-बोध' के अंतिम पायदान तक पहुँचता है। अस्तु कवि ने 'आत्मजयी' में पौराणिक कथावृत्त का सहारा लेकर न केवल आधुनिक संदर्भों में देखने का प्रयास किया है बल्कि एक नया वैचारिक आलोक देकर मनुष्य की स्वतंत्र अभिव्यक्ति की महत्ता को और बढ़ा दिया है, जो उनकी मिथकीय दृष्टि की अत्यंत परिचायक है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- संपादक पुरुषोत्तम अग्रवाल, कुँवर नारायण प्रतिनिधि कविताएँ, पृ. सं. 11
- कुँवर नारायण, आत्मजयी, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली पृ॰ सं॰ 5
- वही पृ॰ सं॰ 20
- रामचंद्र तिवारी, हिंदी का गद्य साहित्य, पृ. सं. 160
- डॉ नगेन्द्र, मिथक और साहित्य, पृ. सं. 7
- रमेशकुंतल मेघ, विश्वमिथक सरित्सागर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली पृ॰ सं॰ 11